इस दीपावली अवश्य करें

कुबेर यंत्र साधना

आप भी गृहस्थी चलाते हैं, राज्य का भी एक तंत्र होता है, हर संस्थान का एक सिस्टम होता है इसी प्रकार देवताओं ने भी एक तंत्र बनाया और भगवान शंकर की आज्ञा से कुबेर को देवताओं का धनाध्यक्ष अर्थात् खजांची बनाया जो देवताओं की सम्पदा को उचित रूप से संग्रह कर सके, उसे व्यर्थ में व्यय नहीं होने दें और उसका श्रेष्ठ उपयोग हो। किसी व्यापार में जब आय से अधिक व्यय होता है तो कर्ज की स्थिति बनती है तथा लक्ष्मी धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है इसलिए हर व्यक्ति को अपने भीतर कुबेर तत्व स्थापित अवश्य करना चाहिए, जिससे धन का अपव्यय नहीं हो, उचित रक्षा हो और भंडार सदैव भरा रहे। कुबेर साधना तथा घर, व्यापार स्थल में कुबेर यंत्र स्थापित करने का यही सीधा साधा रहस्य है।

लक्ष्मी को चलायमान, अस्थिर कहा गया है, और जो व्यक्ति लक्ष्मी को स्थिर कर देता है, उसके अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी रहती ही नहीं, वह अपने लिए तो धन संचय करता ही है, अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कुछ कर सकता है। धन से सब कुछ तो नहीं, लेकिन बहुत कुछ ऐसा किया जा सकता है, जिससे व्यक्तित्व के प्रकाश की आभा जगमगा सकती है, दुःख का भार कम हो सकता है।

मनुष्य जन्म लेता है तो अपने साथ पूर्व जन्मों के कर्मों के कुप्रभाव, दुष्प्रभाव को लेकर उत्पन्न होता है, और इसके साथ इस जन्म के प्रभाव के साथ उसके कार्य, उसकी साधनाएं इत्यादि जुड़ जाते हैं, और जीवन की एक धारा बन जाती है। इसीलिए तो व्यक्ति को ऐसे कर्म, कार्य, साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए, जिनसे जीवन सुधर सके और यही उसका कर्त्तव्य भी है।

एक प्रकार से व्यक्ति तो पूरा जीवन अपना पेट भरने, बीवी-बच्चों को पालने में ही पूरा कर देते हैं। उनके पास इतना धन ही नहीं होता कि वे जीवन के सभी रंगों को देख सकें, अनुभव कर सकें और दूसरों के लिए व समाज के लिए भी कुछ कर सके। दूसरें प्रकार के व्यक्तियों पर धनदेव की असीम कृपा होती है और वे जितना प्रयास करते हैं, उससे अधिक ही कमाते हैं और पूरा जीवन आनन्द से बीताते हैं।

धन के अधिपति देव कुबेर-

कुबेर देव की महता तो निराली ही है। ब्रह्मा और शिव द्वारा विशेष रूप से आशीर्वाद युक्त होने के कारण इनका स्थान शिव के साथ ही है तथा सूर्य के समान तेज है। विशेष बात यह है कि देवताओं को भी धन के लिए कुबेर से ही प्रार्थना करनी पड़ती है। कुबेर का जहां स्थान होता है वहां साक्षात् महालक्ष्मी 'राज्यश्री' के रूप में निवास करती है।

कुबेर नवनिधियों, पद्म , महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चस के स्वामी हैं। यक्ष, गुयिक, किन्नर, देवनियों के अधिपति हैं तथा अप्सराएं इनकी सेविकाएं हैं।

एक-एक निधि, अनन्त वैभव प्राप्त करा सकती है, और कुबेर तो नवनिधियों के स्वामी है। कुबेर के साधक पर शिव कृपा विशेष रूप से रहती है, और गृह रक्षा ब्रह्मा द्वारा अवश्य की जाती है। शुक्र अर्थात् सौन्दर्य, सौभाग्य, सांसारिक सुख, गृहस्थ आनन्द, मदन, यात्रा, संगीत के देव, कुबेर के सहयोगी हैं, अतः कुबेर साधना से शुक्र का सौभाग्य भी पूर्ण रूप से प्राप्त होता है।

कुबेर साधना-

कोई भी यज्ञ, पूजा, उत्सव, कुबेर की पूजा के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। उत्तर दिशा के अधिपति कुबेर का पूजन मध्य में तो होता ही है, पूजन के अन्त में जब मंत्रों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की जाती है, तो वह मूल रूप से कुबेर का प्रार्थना मंत्र ही है।

जिसने कुबेर साधना और उपासना नियमित रूप से सम्पन्न की है, उसे जीवन में जो चाहा वह मिला है, जिस व्यापार में, कार्य में हाथ डाला, उसी में सफलता प्राप्त की है, और धन-लाभ प्राप्त किया है। आकस्मिक तथा गुप्त धन प्राप्ति हेतु भी कुबेर साधना का ही विधान है, क्योंकि कुबेर सिद्धि बिना धन नहीं हो सकता, और यदि आ भी जाता है तो वह स्थित नहीं रह सकता।

कुबेर साधना शिव-साधना तथा शुक्र साधना का भी फल देती है। कुबेर साधना बालकों के लिए आरोग्य लाभ एवं चिरायु की साधना भी है। यदि घर-परिवार में बच्चे बार-बार अस्वस्थ होते हों, तो कुबेर की विधिवत् पूजा करके बालकों को पूजन का जल पिलाने से स्वास्थ्य लाभ होता है।

साधना विधान- सत्य तो यह है कि साधनाएं जटिल और कष्टप्रद होती ही नहीं हैं। मूल रूप से तो यह साधक पर निर्भर है कि वह किस भाव से, किस रूप से, किस समर्पण से, किस विधि से साधना सम्पन्न

करता है। मंत्र जप करते समय ध्यान कहीं और होता है, तो फिर साधना में सफलता कैसे मिलेगी?

कुबेर भी शिव समान सरल देव हैं और इस साधना को प्रतिदिन के पूजा क्रम का अंग ही बना लेना चाहिए।

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी कुबेर सिद्धि दिवस है। इस दिन घर में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त कुबेर यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए। यदि आपके पास पहले से कुबेर यंत्र है तो उसे जल में विसर्जित कर दें और नया प्राणप्रतिष्ठायुक्त कुबेर यंत्र स्थापित कर दें।

प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी कुबेर त्रयोदशी ही मानी जाती है, इस दिन साधक बिना मुहूर्त्त देखे कुबेर साधना सम्पन्न कर सकता है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त शुद्ध रूप से अंकित कुबेर यंत्र तथा कमलगट्टा माला आवश्यक है, इसके साथ ही नारियल, कुंकुम, केशर मौली, ताम्रपत्र में जल दूध, पुष्प, प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए। इस त्रयोदशी के दिन स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मूंह कर बैठें और अपने सामने कुबेर यंत्र को चावलों की ढ़ेरी पर स्थापित करें। पति-पत्नी दोनों साथ में यह साधना कर सकते हैं। सर्वप्रथम कुबेर का ध्यान करें-

ध्यान- मनुजबाह्यविमान वरस्थितं गरूड़रत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम्।।

तत्पश्चात् न्यास सम्पन्न करें।

करन्यास- ऊँ यक्षायांगुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः। धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ देहि दापय स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

इसके बाद 108 बार मंत्र पर पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

।। ऊँ श्रीं ऊँ ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वितेश्वराय नमः।।

अब अपने दायें हाथ में कमल गट्टे की माला लेकर निम्न मंत्र का जप करें। शास्त्रोक्त विधान सवा लाख मंत्र जप का है, परन्तु साधक 5 माला प्रतिदिन मंत्र जप अवश्य ही करें।

मंत्र- ।। ऊँ क्षं क्षीं क्षमाधिपतिः आगच्छ यक्षाय कुबेराय फट्।।

जप समाप्त होने पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए साधना में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा मांग लें।

यदि आपका भवन या व्यापारिक स्थल का निर्माण हो रहा हो, तो अगले दिन यंत्र को उसमें स्थापित कर दें अथवा लाल वस्त्र में बांध कर तिजोरी में रख लें।

माला को लाल कपड़े में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें। सवा महीने के बाद यंत्र को भी नदी में प्रवाहित कर दें।

वास्तव में यह साधना अद्वितीय है, तांत्रिक ग्रंथों में इस साधना का विशेष महत्व है। जिस स्थान पर यह साधना सम्पन्न की जाती है वह स्थान भी लक्ष्मी का प्रिय स्थान बन जाता है।

साधना सामग्री न्यौछावर- 1751/- ♦♦♦

धन त्रयोदशी के अवसर पर

कुबेर साधना सम्पन्न करने से सफलता प्राप्त होगी, यह निश्चित है। शास्त्रों में इस दिन के महत्व का प्रतिपादन करने वाला यह उदाहरण है कि जब पृथ्वी श्री हीन हो गई थी, ब्राह्मण, वाणिक, आदि व्यग्र हो गये, देवताओं की सम्पन्नता भी ह्रास होने लगी, तब समस्त देवी-देवताओं तथा ऋषिगण गुरू बृहस्पति के पास गये, तो उन्होंने कहा- धन त्रयोदशी के दिन लक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतु कुबेर यंत्र साधना सम्पन्न करो, अवश्य ही पुनः सम्पन्नता हो जायेगी' और समस्त देवताओं ने धनत्रयोदशी के दिन श्री व सम्पन्नता प्राप्त करने हेतु साधना कर पुनः सम्पन्नता प्राप्त की। प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी कुबेर त्रयोदशी ही मानी जाती है, इस दिन साधक बिना मुहूर्त्त देख कुबेर साधना सम्पन्न कर सकता है।

शनि पीड़ा से निवारण

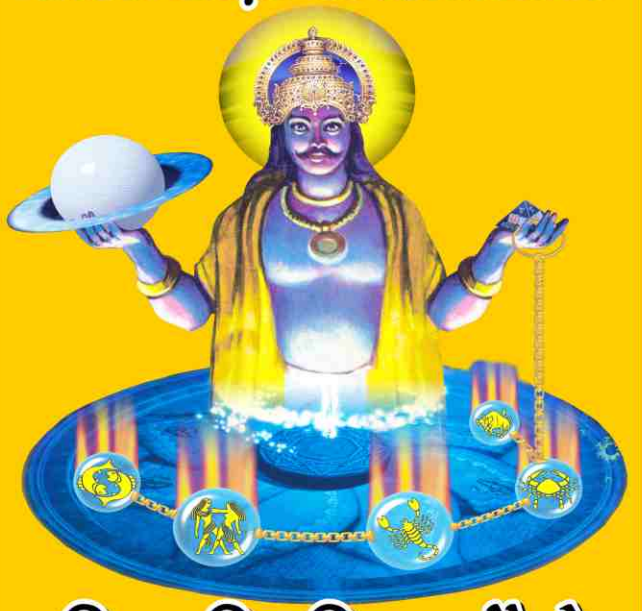

शनि शान्ति विधान पैकेट

शनि की महिमा बड़ी निराली है। शनि नाम है पीड़ा का, दुःख का। लेकिन वहीं शनि भौतिक सुखदाता भी है। शनि भाग्य बिगाड़ता है तो संवारता भी है। सूर्यपुत्र शनिदेव जिनके पराक्रम से मनुष्य तो क्या देवता भी घबराते हैं। शनि यदि प्रसन्न हो जाये तो रंक को राजा बना दे और क्रुद्ध हो जाये तो राजा को रंक। आईये! शनि जयन्ती पर हम भी शनि देव को प्रसन्न कर शनि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त करें।

याद रखिये! सौभाग्यशाली अवसर बार-बार नहीं आते।

शनि शान्ति विधान पैकेट में आप पायेंगे

1.शनि पुरुषाकार यंत्र 2. शनि माला 3.शनि तैतीसा यंत्र+महामृत्युंजय यंत्र 4.पुतला छत पर लटकाने के लिये 5. घोड़े की नाल 6.शनि का छल्ला 7.पारद शिवलिंग 8.शनि यंत्र पिरामिड 9.शनि शान्ति के मंत्र-स्तोत्र-अष्टक आदि की पॉकेट पुस्तक 10.शनि से संबंधित उपायों की सी.डी.।

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सभी सामग्री एक साथ मात्र 3500 रू में

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org